B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A) /Unit – 4(d)
Topic – निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण
(Diagnostic and Remedial Teaching)
Lecture No. - 63

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

भूमिका (Introduction)

शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान की एक विशेष देन है। मनोविज्ञान ने वैयक्तिक विभिन्नताओं को विशेष महत्व प्रदान किया है। सभी बच्चे समान रूप से नहीं सीखते है। शिक्षक द्वारा पढ़ायी पाठ्यवस्तु को कुछ बच्चे शीघ्र सीखते हैं , कुछ विलम्ब से सीखते हैं, तो कुछ बिल्कुल भी नहीं सीख पाते हैं। आज के इस वैज्ञानिक युग में यदि बच्चे नहीं सीख पाते हैं तो उसका कारण जानने की कोशिश की जाती है एवं उन उन कारणों को दूर करते हुए शिक्षण पर बल दिया जाता है। बच्चों की सीखने संबंधी कठिनाइयों को जानने की क्रिया को निदानात्मक शिक्षण एवं इन कठिनाइयों को दूर करते हुए शिक्षण की क्रिया को उपचारात्मक शिक्षण कहते हैं। अतः कहा जा सकता है कि निदानात्मक एव उपचारात्मक शिक्षण एक ही प्रक्रिया के दो पहलू हैं।

नैदानिक परीक्षण
(Diagnostic Test)

शिक्षा में नैदानिक परीक्षण की प्रक्रिया चिकित्सा विज्ञान से आयी है। एक डॉक्टर उपचार के पहले रोगी के लक्षण देखकर रोग का अनुमान लगाता है एवं कारणों को देखकर रोग का निदान करता है। निदान के उपरान्त उसका उपचार करता है। एक शिक्षक का कार्य भी कुछ इसी तरह का है। उससे शिक्षा ग्रहण करने वाले बालक प्रतिभावान, पिछड़े या मंदबुद्धि के हो सकते हैं। शिक्षक का कार्य बच्चों के पिछड़ने

का पता लगाना होता है। यही शैक्षणिक निदान का कार्य है। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं -

1. **गुड** के अनुसार, "निदान का अर्थ है अधिगम संबंधी कठिनाइयों और कमियों के स्वरूप का निरीक्षण करना।"

2. **योकम एवं सिम्पसन** के अनुसार, "निदान किसी कठिनाई का उसके चिन्हों या लक्षणों से ज्ञान प्राप्त करने की कला या कार्य है। यह तथ्यों पर आधारित कठिनाइयों का स्पष्टीकरण है।"

3. **मरसेल** के शब्दों में, "जिस शिक्षण में बालकों की विशिष्ट त्रुटियों का निदान करने का विशेष प्रयास किया जाता है उसे बहुधा निदानात्मक शिक्षण या शैक्षिक निदान कहते हैं।"

नैदानिक परीक्षण का स्वरूप
(Form of Diagnostic Test)

नैदानिक परीक्षा में छात्रों को वार्षिक, अर्धवार्षिक, उपलब्धि या निष्पत्ति परीक्षाओं की तरह अंक प्रदान नहीं किया जाता। इस प्रकार की परीक्षाओं का लक्ष्य केवल मात्र विषय संबंधी कठिनाइयों एवं कमजोरियों का निदान करना है। इस प्रकार की परीक्षा में छात्रों की कठिनाई का स्तर क्रमबद्ध प्रश्न के कठिनाई स्तर के अनुसार ज्ञात किया जा सकता है। यह क्रम सरल से जटिल की ओर होता है। प्रश्न मुख्यतः वस्तुनिष्ठ या लघुउत्तरीय होते हैं। इस क्रम में यदि कोई छात्र निश्चित प्रश्न हल नहीं कर पाता है तो इससे उसे हो रही कठिनाई के स्तर का पता लगाया जा सकता है।

To be Continued....